विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 46 : नई दिल्ली : 8-14 फरवरी 2019

अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत, महातपस्वी परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए १५५वें मर्यादा महोत्सव हेतु कोयम्बत्तूर में पधार गए हैं। स्थानीय जैन एवं जैनेतर समाज द्वारा आचार्यप्रवर का भव्य और भावभीना स्वागत किया गया। आचार्यप्रवर ने चेन्नई चतुर्मास के बाद कोयम्बत्तूर के तेरापंथ भवन में प्रवेश तक करीब ६०० कि.मी. की दूरी तय की। इस यात्रा के दौरान मात्र तिरुपुर में ही एक स्थान पर निरंतर एकाधिक रात्रियों का प्रवास रहा। पूज्यप्रवर पूर्व निर्णीत कार्यक्रमानुसार १८ फरवरी को कोयम्बत्तूर से केरल की ओर प्रस्थित हो जाएंगे। केरल की यात्रा सम्पन्न कर पूज्यप्रवर पुनः तमिलनाडु पधारेंगे। धरती के छोर पर स्थित कन्याकुमारी में पूज्यप्रवर का २५ व २६ मार्च का प्रवास पूर्व निर्धारित है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण तमिलनाडु में

सक्षम अवस्था में कर लें पुरुषार्थ साध्य धर्म

३० जनवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः कांगेयम से पड़ियुर की ओर प्रस्थान किया। बादलों के कारण सूर्य अदृश्य बना हुआ था। कांगेयम के कई नागरिक पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। इसी प्रकार शिवनमलै और पड़ियुर के ग्रामीणों ने भी पूज्यप्रवर को वंदन किया तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। आज के विहार पथ के आसपास इमली के वृक्षों की भरमार थी। कई वृक्षों पर लदी हुई इमलियां राहगीरों का ध्यान सहज ही अपनी ओर खींच रही थीं। पूज्यप्रवर करीब १२.५ कि.मी. का विहार कर पड़ियुर में स्थित गवर्नमेंट हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी पूज्यप्रवर की अगवानी में मुख्य मार्ग के परिपार्श्व में उपस्थित थे। पूज्यप्रवर के पधारते ही कतारबद्ध खड़े उन लोगों ने करबद्ध होकर आचार्यप्रवर का सादर स्वागत किया।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने प्रवचन में श्रावक के तीन मनोरथों की चर्चा की।

गत चतुर्मास बेंगलुरु में सम्पन्न कर मुनि रणजीतकुमारजी और मुनि रमेशकुमारजी आज पूज्य सन्निधि में पहुंचे। कार्यक्रम के दौरान मुनि रणजीतकुमारजी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। मुनि प्रशांतकुमारजी और मुनि ज्ञानेन्द्रकुमारजी ने आज अपने सहवर्ती संतों के साथ पांच वर्षों पश्चात् परम पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शन किए।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'मुनि रणजीतकुमारजी स्वामी मेरे लिए एक रत्नाधिक संत हैं। मैंने दीक्षा ली, तब ये वहीं थे। ये गुरुकुलवास में भी काफी समय तक रहे हैं। आज करीब पांच वर्षों बाद गुरुकुलवास में आए हैं। खूब अच्छा रहे। अच्छी साधना, अच्छा स्वाध्याय, अच्छी सेवा, अच्छा कार्य, सब कुछ अच्छा चलता रहे। मुनिश्री रणजीतकुमारजी स्वामी और मुनि रमेशकुमारजी बेंगलुरु में संयुक्त अग्रणी के रूप में थे। मुनि रमेशजी भी खूब अच्छा कार्य करते रहें। मुनि ज्ञानेन्द्रकुमारजी और मुनि प्रशांतकुमारजी आदि संत भी आए हैं। वे भी खूब अच्छा कार्य करते रहें।'

विद्यालय की असिस्टेंट प्रिंसिपल श्रीमती मघेश्वरी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में कहा--'अपनी अहिंसा

यात्रा के साथ आज हमारे विद्यालय में पधारे आचार्यश्री महाश्रमणजी का मैं अपनी स्कूल, शिक्षकों व विद्यार्थियों की ओर से हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन करती हूं। आपकी अहिंसा यात्रा मंगलमय हो, आप ऐसे ही हम सभी को अपना आशीर्वाद प्रदान करते रहें।' पूज्यप्रवर ने उन्हें अंग्रेजी भाषा में प्रेरणा प्रदान की।

परमाराध्य आचार्यप्रवर सायंकाल पड़ियुर से पुदुपालयम की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में पड़ियुर सत्यनगर के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। पूज्यप्रवर की प्रतीक्षा में काफी देर से मार्ग के निकट खड़ी रंगपालयम की एक महिला ने पूज्यप्रवर के निकट पधारते ही वंदन किया और अपना दुःख पूज्यप्रवर के समक्ष प्रस्तुत किया। पूज्यप्रवर ने एक मंत्र का उच्चारण करते हुए उस मंत्र के जप की प्रेरणा प्रदान की। वह बोली--'मेरे भगवान! आपके दर्शन कर लिए तो आज तीर्थ का दर्शन हो गया। आप सच्चे भगवान हैं। सबका कल्याण कर रहे हैं।' वननलाई पुदुर के ग्रामीणों ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीष प्राप्त की। करीब ८.२ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर पुदुपालयम में स्थित कोन्गु मैट्रिकुलेशन स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

तिरुपुर में पहली बार त्रिलोकीनाथ का पावन पदार्पण

३१ जनवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः पुदुपालयम से तिरुपुर की ओर प्रस्थान किया। कोन्गु मैट्रिकुलेशन स्कूल के कोरसपोन्डेंट श्री चंद्रशेखर सपत्नी पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए और पूज्यचरणों में अपनी कृतज्ञता अर्पित की। आचार्यप्रवर ने उन्हें अंग्रेजी भाषा में प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'विद्यालय एक प्रकार का मंदिर होता है। उसमें ज्ञान और चारित्र की प्रतिदिन पूजा होनी चाहिए।' मार्ग में पी.ई.एम. स्कूल के ऑनर श्री विष्णुजी के अनुरोध पर पूज्यप्रवर विद्यालय परिसर के कुछ भीतर पधारे। साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों का गत रात्रि का प्रवास इसी विद्यालय में हुआ था। विष्णुजी आदि ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें भी पावन प्रेरणा प्रदान की। मार्गवर्ती नल्लूर के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। विहार के दौरान कई श्रद्धालुओं ने अपने-अपने घरों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन कर श्रीमुख से मंगलपाठ का श्रवण किया।

तेरापंथ के किसी भी आचार्यप्रवर के प्रथम पदार्पण से तिरुपुरवासियों का उत्साह, उल्लास चरम को छू रहा था। चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण दिखाई दे रहा था। न केवल तेरापंथ समाज के लोग, अपितु अन्य जैन एवं जैनेतर श्रद्धालु भी आचार्यप्रवर के पदार्पण से हर्षाभिभूत थे। भव्य स्वागत जुलूस में विभिन्न जातियों, वर्गों, संप्रदायों के लोग सोत्साह संभागी बने हुए थे। पूज्यप्रवर करीब १२ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर तिरुपुर के चार दिवसीय प्रवास हेतु तिरुपुर में स्थित जे.एम. जैन बिल्डिंग में पधारे। बीदासर निवासी दिल्ली प्रवासी श्री जीतमल जैन परिवार अपने आराध्य को अपने आंगन में पाकर अतिशय हर्षविभोर था।

वर्धमान समवसरण में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में वाणी संयम और वाणी विवेक की प्रेरणा प्रदान की।

स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने पृथक-पृथक गीतों के द्वारा पूज्यप्रवर का आस्थासिक्त अभिनन्दन किया। वर्धमान महोत्सव प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाश दूगड़ तथा तेरापंथी सभा-तिरुपुर के मंत्री श्री जितेन्द्र भंसाली ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। गत चतुर्मास तिरुपुर में करने वाले मुनि प्रशांतकुमारजी ने पूज्यप्रवर की अभिवन्दना में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'स्वागत कार्यक्रम चला। अनेक अभिव्यक्तियां हुईं। तिरुपुर के लोगों में खूब धार्मिक उल्लास वर्धमान रहे। मुनि प्रशांतकुमारजी कल गुरुकुलवास में आ गए। उनके स्वास्थ्य में कुछ कठिनाई पैदा हो गई थी। स्वास्थ्य खूब अच्छा रहे। ये हमारे एक प्रबुद्ध संत हैं, ऐसा लगता है। नाम प्रशांत है और लगते

भी प्रशांत हैं। ये गुरुदेव महाप्रज्ञजी के आसपास रहे हुए हैं। मुनि कुमुदकुमारजी इनके साथ हैं। ज्ञान, साधना और स्वास्थ्य सबका अच्छा क्रम रहे, खूब अच्छा विकास होता रहे।'

कार्यक्रम के दौरान तिरुपुर उत्तरी विधायक श्री के.एन. विजयकुमार ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन मार्गदर्शन और आशीष प्राप्त की।

त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव का शुभारम्भ

१ फरवरी। तिरुपुर के चार दिवसीय प्रवास का दूसरा दिन। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः प्रवास स्थल से प्रस्थान कर मुनि विनोदकुमारजी (चूरू), मुनि नम्रकुमारजी और मुमुक्षु वंदना के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के निवास स्थान पर पधारे। पूज्यप्रवर के इस अनुग्रह में अभिस्नात कोठारी परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था। तदुपरान्त आचार्यप्रवर साध्वी किरणयशाजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के निवास स्थल में भी पधारे। आचार्यप्रवर के पदार्पण से गर्ग परिवार आह्लादित था। करीब ५ कि.मी. की यात्रा सम्पन्न कर पूज्यप्रवर पुनः प्रवास स्थल में पधार गए। मार्ग में कई श्रद्धालुओं को अपने-अपने घरों/व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के समीप पूज्यप्रवर के दर्शन करने और श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आज वर्धमान महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। कार्यक्रम के प्रारम्भ में समणीवृंद ने 'वर्धमान का मोछव लाया, वर्धमान उपहार' गीत का संगान किया।

साध्वीवर्याजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आज वर्धमान महोत्सव का शुभारम्भ हुआ है। यह महोत्सव हमें निरंतर विकास करते रहने की प्रेरणा और संदेश देता है। विकास अनेक रूपों में हो सकता है। वह बाह्य भी हो सकता है और आंतरिक, आध्यात्मिक भी हो सकता है। संख्या का भी विकास हो सकता है और गुणात्मक विकास भी हो सकता है। वर्धमान महोत्सव से सर्वांगीण विकास की प्रेरणा ली जा सकती है। आध्यात्मिक विकास करने के लिए निर्मलता, तेजस्विता और गंभीरता अपेक्षित होती है। निर्मलता के लिए अपने कषायों को उपशांत बनाना चाहिए। ज्योतिकेन्द्र पर श्वेत रंग के ध्यान से निर्मलता बढ़ सकती है। इन्द्रिय व मन के संयम के द्वारा तेजस्विता को प्राप्त किया जा सकता है। उसके लिए दर्शन केन्द्र पर अरुण रंग का ध्यान करना चाहिए। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रायः प्रतिमाह की २१ तारीख को गत कुछ वर्षों में दीक्षित साध्वियों को ध्यान के प्रयोग करवाते हैं और प्रेरणा भी प्रदान करते हैं। साध्वियों के उस समूह को अभिधान दिया गया है--'णमो सिद्धाणं वर्ग'। वर्तमान में आचार्यप्रवर हमें दर्शन केन्द्र पर चमकते हुए अरुण रंग का ध्यान करते हुए 'ऊँ ह्रीं णमो सिद्धाणं' का ध्यान करने का प्रयोग करवा रहे हैं। गंभीरता के विकास के लिए कंठ पर बैंगनी या पीले रंग के साथ 'णमो आयरियाणं' का ध्यान करना चाहिए। इस प्रकार आदमी निर्मलता, तेजस्विता और गंभीरता का विकास कर स्वयं वर्धमान बन सकता है और संघ को भी वर्धमान बना सकता है।'

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'वर्तमान अवसर्पिणी के बाईसवें तीर्थंकर जितेन्द्रिय अरिष्टनेमि विरक्ति की ओर आगे बढ़े और केशलुंचन कर लिया। उस समय उन्हें वासुदेव ने मंगलकामना प्रदान की--

नाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेण तहवे य।
खंतीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि य।।

हम भी नवदीक्षितों को ऐसी मंगलकामना दिया करते हैं। प्रस्तुत श्लोक में 'वड्ढमाणो' शब्द प्रयुक्त हुआ है। आदमी को अपने जीवन में वर्धमान रहना चाहिए, विकास करना चाहिए। भौतिक दिशा में भी विकास हो सकता है और आध्यात्मिक दिशा को भी विकास के लिए चुना जा सकता है। दुनिया में भौतिकता भी अपेक्षित होती है और अभौतिकता भी आवश्यक होती है।

आज वर्धमान महोत्सव का समायोजन हो रहा है। तीन संदर्भ इस महोत्सव के नामकरण के साथ देखे

जा सकते हैं--

१. वर्तमान अवसर्पिणी के चौबीसवें तीर्थंकर वर्धमान थे। 'लोगस्स' में उच्चरित होता है--'पासं तह वद्धमाणं च' यहां उनका नाम महावीर नहीं दिया गया, यहां तो वर्धमान को नमस्कार किया गया है। हमारे इस वर्धमान महोत्सव के साथ चाहे-अनचाहे प्रभु महावीर का नाम समाविष्ट हो गया है, यह बहुत अच्छा है। भगवान महावीर के शासन में हम जी रहे हैं। वे हमारे आराध्य स्थान पर विराजमान हैं। ऐसे परम प्रभु का नाम वर्धमान महोत्सव के नाम के साथ हमारी जिह्वा पर अवतरित हो जाता है। मानों कि वह जिह्वा भी धन्य हो जाती है, जिसका प्रयोग परम पवित्र आत्माओं का नाम लेने के लिए होता है।

२. मर्यादा महोत्सव होता है, उससे पहले गुरुकुलवास में साधु-साध्वियों की संख्या वृद्धि होती है। कई बार तो बहुत अच्छी संख्या हो जाती है। सैंकड़ों साधु-साध्वियां गुरुकुलवास में स्थित हो जाते हैं। जिस नगर में इतनी संख्या में चारित्रात्माएं अवस्थित होते हैं, वह नगर भी धवलिमायुक्त-सा हो जाता है। गुरुकुलवास में चारित्रात्माओं की संख्यावृद्धि का संदर्भ भी वर्धमान महोत्सव नाम के साथ जुड़ा हुआ है। वर्तमान में तो समणश्रेणी के सदस्यों की संख्या भी गुरुकुलवास में बढ़ जाती है। मानों संख्यावृद्धि के उल्लास में वर्धमान महोत्सव आयोजित होता है।

३. गुणवत्ता वर्धमान रहे। यह महोत्सव गुणवत्ता को बढ़ाने की प्रेरणा देने वाला बन सकता है। जीवन में गुणवत्ता है तो मानों प्राणवत्ता है। अन्यथा जीवन निष्प्राण-सा बन जाता है। हमारे जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ में परम पूज्य आचार्य भिक्षु प्रथम गुरु के रूप में प्राप्त हुए थे। हम उनके द्वारा प्रवर्तित इस धर्मसंघ के सदस्य हैं। हमें वर्धमान रहना चाहिए। इसके लिए आवश्यकता है कि हम ज्ञान वृद्धि करने का प्रयास करें। हम धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करें।

हमें आगम वाङ्मय के रूप में बहुत ही अच्छा साहित्य संप्राप्त है। मुझे तो आगम बहुत अच्छे लगते हैं। आगमों की वाणी कितनी सुन्दर है। हम यथासंभव प्रतिदिन आगम से जुड़े रहें, भले चितारना कर लें। दसवेआलियं एक छोटा-सा आगम है। वह भी कितना सुन्दर है। उसका स्वाध्याय प्रतिदिन हो जाए तो और भी अच्छी बात है। दसवेआलियं को पक्का रखने का प्रयास होना चाहिए। उसे अपना मित्र बना लेना चाहिए। जिन्हें पूरा कंठस्थ न हो, पक्का न हो, उन्हें दसवेआलियं के छोटे-से चौपनिये (पुस्तिका) को अपना मित्रवत बना लेना चाहिए। जो साधु-साध्वियां समण-समणियां दसवेआलियं प्रायः प्रतिदिन चितारते हैं, उन्हें मेरी ओर से साधुवाद है। यह बहुत अच्छी बात होती है।

'उत्तरज्झयणाणि' पूरा याद न हो तो उसके कुछ अध्ययन भी याद कर लिए जाएं। एक-एक अध्ययन रत्न की तरह हैं, जिन्हें जितने अध्ययन कंठस्थ रहते हैं, उनके पास उतने रत्न हो जाते हैं। आगम तो साधु की एक सम्पत्ति है, शक्ति है। आगम स्वाध्याय से गुणवत्ता का और अधिक विकास हो सकता है। मेरी चारित्रात्माओं व समणश्रेणी के सदस्यों को सलाह है कि वे दसवेआलियं और उत्तरज्झयणाणि के यथासंभव स्वाध्याय का प्रयास करें। कंठस्थ ज्ञान इतना पक्का हो कि उसके लिए पुस्तक के सहयोग की अपेक्षा ही न पड़े, अंधेरे में भी उसका चितारना किया जा सके। हमारे धर्मसंघ के द्वितीय आचार्य भारमलजी स्वामी किस प्रकार उत्तरज्झयणाणि का स्वाध्याय कर लेते थे। दसवेआलियं और उत्तरज्झयणाणि--ये दो आगम तो मैंने कंठस्थ और चितारने के संदर्भ में बता दिए। शेष आगमों का भी स्वाध्याय होना चाहिए। उनका अर्थ, टिप्पण आदि भी पढ़ते रहना चाहिए। आगम स्वाध्याय एक ऐसा अमृत है, जो हमारे संयम रूपी बगीचे को सिंचन देने वाला है।

ज्ञान वृद्धि होनी चाहिए। अन्य ग्रंथों से भी ज्ञान विकास हो सकता है। 'तत्त्वार्थभाष्यानुसारिणी वृत्ति' संस्कृत भाषा का ग्रंथ है। वह बहुत ही सुन्दर ग्रंथ है। बार-बार धन्यवाद या वन्दना (जो भी उचित हो) आचार्य उमास्वाति को, जिन्होंने 'तत्त्वार्थ' के रूप में एक सुन्दर ग्रंथ रचा और फिर उस पर स्वोपज्ञ भाष्य भी लिख

दिया। फिर वंदना करें या साधुवाद दें (जो भी उचित हो) सिद्धसेनगणी को, जिन्होंने तत्त्वार्थ भाष्य पर कितनी सुन्दर व्याख्या लिख दी। 'तत्त्वार्थभाष्यानुसारिणी वृत्ति' एक ऐसा ग्रंथ है, जिसकी बातें जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ से लगभग सम्मत हैं, आगमों से लगभग सम्मत हैं, ऐसा मुझे प्रतीत हुआ। ऐसे ग्रंथों के स्वाध्याय से भी अच्छा ज्ञान प्राप्त हो सकता है, आगम संबंधित बातें प्राप्त हो सकती हैं। जैन दर्शन का किसी को गहराई से अध्ययन करना हो तो उसे 'तत्त्वार्थभाष्यानुसारिणी वृत्ति' का स्वाध्याय कर लेना चाहिए। दूसरा ग्रंथ है--'जैन दर्शन : मनन और मीमांसा'। यह परम पूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञजी की कृति है। इन दो ग्रंथों को कोई अच्छी तरह पढ़ ले तो उसे जैन दर्शन का अच्छा ज्ञान हो सकता है।

ज्ञान के साथ हम दर्शन में भी वर्धमान रहें। हमारी श्रद्धा यथार्थ के प्रति होनी चाहिए। 'तमेव सच्चं णीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं'-- वही सत्य और निःशंक है अथवा वह सत्य और निःशंक ही है जो जिनेश्वर भगवान ने बताया है। हमारा कोई दुराग्रह न हो। जो तथ्य है, यथार्थ है, उसे हमारा समर्थन रहे। किसी भी ग्रंथ में, किसी भी पंथ में या किसी संत के पास तथ्य हो, उसे हमारा समर्थन है। तथ्य का समर्थन करना दर्शन की निर्मलता की स्थिति होती है। ज्ञान और दर्शन में हम वर्धमान रहें, ये दोनों हमारे परिपुष्ट रहें।'

पूज्यप्रवर के पूछने पर 'चाय' के आजीवन त्याग वाले साधु-साध्वियों और समणश्रेणी के सदस्यों ने खड़े-खड़े पूज्यप्रवर को वंदन किया। उसके पश्चात् पूज्यप्रवर ने अन्य कई इच्छुक साधु-साध्वियों व समणश्रेणी के सदस्यों को 'चाय' के यावज्जीवन के लिए त्याग भी करवाए।

तेरापंथ कन्या मण्डल-तिरुपुर की कन्याओं ने पूज्यप्रवर की अभिवन्दना में गीत का संगान किया। स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती अनिता बरड़िया, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री जयसिंह कोठारी, श्रीमती पुष्पादेवी भादानी और उपासिका श्रीमती संजू दूगड़ ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। श्री जीतमल चोरड़िया ने अपने स्थान में प्रवास करने के संदर्भ में पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की।

गत चतुर्मास तिरुपुर में करने वाले मुनि प्रशांतकुमारजी के सहवर्ती मुनि कुमुदकुमारजी ने पूज्यप्रवर के अभिनन्दन में अपने भावों को अभिव्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आज मध्याह्न में मूर्तिपूजक संप्रदाय के आचार्यश्री मणिप्रभसागरजी की शिष्या साध्वी हेमप्रभाश्रीजी की शिष्या साध्वी सुधांजनाश्रीजी आदि साध्वियां पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंची। पूज्यप्रवर का उनसे कुछ समय तक वार्तालाप हुआ। साध्वीजी के साथ समागत मूर्तिपूजक लोग भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। आज तिरुपुर वर्धमान स्थानकवासी समाज के लोग भी बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंचे। उन्होंने पूज्यप्रवर से स्थानक पधारने की प्रार्थना की तथा पूज्यप्रवर द्वारा संवत्सरी की एकता के संदर्भ में लिए गए निर्णय के लिए श्रीचरणों में आभार अर्पित किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का ४८वां चयन दिवस

२ फरवरी। माघ कृष्णा त्रयोदशी। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का ४८वां चयन दिवस। सूर्योदय के उपरान्त साध्वीप्रमुखाजी परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुईं। वर्धमान समवसरण में आयोजित वर्धापना कार्यक्रम में समणीवृंद, साध्वीवृंद और मुनिवृंद ने पृथक-पृथक गीतों के माध्यम से साध्वीप्रमुखाजी को वर्धापित किया। मुनि कुमारश्रमणजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए चयन दिवस के उपलक्ष में स्वयं द्वारा बनाई गई कलाकृति साध्वीप्रमुखाजी को उपहृत की। समणी नियोजिका मल्लिप्रज्ञाजी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए तथा समणीवृंद द्वारा रचित ५७ कविताओं की हस्तलिखित पत्रिका 'प्रणति' साध्वीवर्याजी के माध्यम से श्रीचरणों में समर्पित की गई।

साध्वीवर्याजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी में संघ व संघपति के प्रति

असाधारण समर्पण का भाव है। आपमें असाधारण रूप में विश्वस्तता भी देखी जा सकती है। आपने अपने कौशल, व्यक्तित्व और कर्तृत्व से आचार्यत्रयी का विश्वास अर्जित किया। आपकी विनयशीलता भी असाधारण है। आपमें असाधारण कार्यदक्षता का भी दर्शन होता है। आपमें तार्किकता और बौद्धिकता भी असाधारण रूप में है। वस्तुतः ऐसी असाधारण साध्वीप्रमुखा को पाकर संघ धन्य है। आपके उपपात में पहुंचकर आंगतुक निश्चिंतता का अनुभव करता है। आपके गुणों के प्रति मैं नतमस्तक हूं। मैं इस अवसर पर मंगलकामना करती हूं कि आप चिरायु और निरामय रहते हुए साध्वी समाज की असाधारण सार-संभाल करते रहें।'

साध्वीवर्याजी ने इस उपलक्ष में मुख्यनियोजिकाजी द्वारा रचित कविता का वाचन करते हुए उसे साध्वीप्रमुखाजी को समर्पित किया।

मुख्यमुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'आज साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का ४८वां चयन दिवस है। आपका जीवन अनेक विशेषताओं से सम्पन्न है। आपका जीवन निष्ठा का जीवन है। आचार्यप्रवर पांच निष्ठाएं फरमाते हैं--आत्मनिष्ठा, संघनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा, आचारनिष्ठा और मर्यादानिष्ठा। साध्वीप्रमुखाजी का जीवन इस निष्ठापंचक से निष्णात है। आप स्वयं चित्त समाधि में रहती हैं और साध्वियों की चित्त समाधि का ध्यान रखती हैं। आपके जीवन में पुरुषार्थ की लौ निरंतर प्रज्वलित रहती है। आपका आभामण्डल पवित्र है। उसे देखकर दर्शक को आनंद की अनुभूति होती है। आपका संघ व गुरु के प्रति समर्पण भी अद्भूत है। आज मैं इस चयन दिवस के अवसर पर यही मंगलकामना करता हूं कि आप स्वस्थ रहती हुई दीर्घकाल तक संघ को अपनी सेवाएं और हमें मार्गदर्शन प्रदान करती रहें।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'कुछ दिन पहले की बात है, मुझे एक बालिका ने प्रश्न किया कि आपने साध्वीप्रमुखा बनने के लिए क्या किया? एक क्षण तो मैंने सोचा कि मैंने तो कुछ किया ही नहीं। उस समय मैंने उसे जो उत्तर देना था, दे दिया। मेरा यह मानना है कि मैंने जो कुछ किया अच्छी साध्वी बनने के लिए किया। प्रारम्भ से मेरा एक ही लक्ष्य था कि गुरुदेव और रत्नाधिक साध्वियों के निर्देश के अनुरूप मुझे मेरा जीवन बनाना है। उसके अतिरिक्त मैंने न कुछ सोचा, न कुछ लक्ष्य बनाया और न ही कल्पना की। तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य बनने के लिए, साध्वीप्रमुखा बनने के लिए कोई कुछ करे, यह परंपरा भी नहीं है और ऐसा होना भी नहीं चाहिए। हमारे मन में अग्रणी आदि बनने की भी आकांक्षा नहीं होनी चाहिए।

मुझे याद है कि गुरुदेव तुलसी ने एक प्रयोग करते हुए साध्वियों में निकाय व्यवस्था का प्रवर्तन किया। उस समय तत्कालीन साध्वीप्रमुखा लांडाजी के कुछ कार्यों को साध्वियों को सौंपा गया। इसे लेकर समाज में थोड़ी हलचल भी हुई। उस समय सेवाभावी मुनिश्री चंपालालजी स्वामी ने एक बात कही कि कोई कुछ भी कहे, मैं तो यही कहता हूं कि सबसे बड़ा पद साधु का है। वह पद सुरक्षित है तो सारे पद सुरक्षित हैं। मैं भी परम पूज्य आचार्यप्रवर से यही निवेदन करती हूं कि मेरा साध्वीपद हमेशा बरकरार रहे और उत्तरोत्तर गतिमान रहे, मेरी यही कामना है।

गुरुदेव तुलसी ने मुझे इस स्थान पर नियोजित किया। मैं यह मानती हूं कि मुझे बनाने के लिए जो कुछ किया, उन्होंने किया, मैंने कुछ नहीं किया। मेरी तो यह मानसिकता ही नहीं थी कि इस पद पर रहकर कार्य करूं, इसलिए कई महीनों तक गुरुदेव को निवेदन करती रही, संघ में इतनी साध्वियां अनुभवी हैं, प्रौढ़ हैं, आप उनसे कार्य करवाएं। मैं तो व्यवस्था का 'क,ख,ग,घ,ड़' भी नहीं जानती थी। मैंने ग्यारह वर्षों के जीवन में किसी प्रकार का कार्य नहीं संभाला। न प्रशासनिक दृष्टि से कुछ सोचा और न ही कुछ किया। गुरुदेव का तो मुझे प्रारम्भ से ही यही आश्वासन मिला कि तुम चिंता मत करो, तुम्हारा तो बस नाम रहे, कार्य मैं करूंगा। ऐसा मानना चाहिए कि एक मां जैसे अपने बच्चे को अंगुलि पकड़कर चलना सिखाती है, वैसे गुरुदेव ने मुझे सब कुछ सिखाया। इसलिए मेरा अपना कुछ भी नहीं, जो कुछ है, सब गुरुदेव का है। मैं तो यह मानती हूं कि आज

जो लोग मेरे विषय में कहते हैं, वह गुरुत्रयी की कृपा का ही प्रसाद है। तीनों आचार्यों की शिष्या होना ही मेरी पहचान है, अन्य किसी पहचान की मुझे आवश्यकता नहीं है।

परम पूज्य आचार्य तुलसी ने तो मुझे सब कुछ दिया है। उन्होंने मुझे शैक्षणिक दृष्टि से भी बहुत कुछ दिया। दीक्षित होते ही मुझे उनके चरणों में बैठकर अध्ययन का अवसर मिला। हमने उनके पास सबसे पहले 'भिक्षुशब्दानुशासनम्' का अध्ययन शुरू किया, जो करीब तीन-साढ़े तीन वर्षों तक चलता रहा। और भी न जाने कितने विषयों और ग्रंथों का पारायण गुरुदेव ने करवाया। आगम भी पढ़ाए, काव्य भी पढ़ाए, व्याकरण भी पढ़ाई और दर्शन भी पढ़ाया। दीक्षा लेते ही हमें दसवेआलियं का अर्थ भी सर्वप्रथम गुरुदेव ने करवाया। उससे भी हमारे संस्कारों को पोषण मिला।

उसके बाद गुरुदेव ने मुझे अपने प्रवचन लिखने का कार्य सौंपा। मैंने करीब एक वर्ष तक गुरुदेव के प्रवचनों का लेखन किया। मुझे लिखना आता नहीं था। मैं 'नोट्स' लेती, फिर उन्हें व्यवस्थित रूप में लिखती, गुरुदेव को दिखाती, गुरुदेव उसमें 'करेक्शन्स' सुझाते, मैं फिर लिखकर गुरुदेव को बताती। वे प्रवचन भी प्रवचन पाथेय में सुरक्षित हैं। मेरे लिए यह विशेष बात है कि मेरा पहला अभ्यास संघ की संपदा के रूप में सुरक्षित है। उसके बाद हमने लेख लिखने शुरू किए। बीदासर चतुर्मास में गुरुदेव हमें आचारांग पढ़ाते। मुनिश्री नथमलजी (आचार्यश्री महाप्रज्ञजी) भी गुरुदेव के साथ रहते थे। उस समय एक क्रम बनाया गया कि अध्ययन करने वाले जितने भी साधु-साध्वियां हैं, एक-एक अध्ययन की परिसमाप्ति के बाद सबको एक-एक लेख लिखना है। हमने लेख लिखना शुरू किया। उन लेखों में परिमार्जन, परिष्कार का पथदर्शन हमें आचार्य महाप्रज्ञजी से मिलता था। उससे कुछ-कुछ लिखना सीखा।

इसी प्रकार कविता लिखने का भी मुझे कोई अनुभव नहीं था और न ही मैं विशेष पढ़ी-लिखी थी। लोगों को आश्चर्य होगा कि स्कूल में मैंने केवल तीन कक्षा तक का ही अध्ययन किया था। उसके बाद घर की परिस्थितियों के कारण मेरा स्कूल जाना बंद हो गया। यद्यपि मुझे आश्वासन दिया गया था कि तुम्हें आगे पढ़ा देंगे, किन्तु ऐसा योग नहीं बना। गुरुदेव की कृपा से पारमार्थिक शिक्षण संस्था में कुछ अध्ययन का अवसर मिला। जब मैं संस्था में थी, तब गुरुदेव ने लखनऊ प्रवास के दौरान एक दिन साध्वियों को कविता लिखने की प्रेरणा प्रदान की। हम लोग उपासना में बैठे थे। मैंने भी उस प्रेरणा को ग्रहण किया और मन ही मन मैंने संकल्प किया कि मुझे छुट्टियों में घर जाना है तो वहां प्रतिदिन एक-एक कविता बनाऊंगी। संकल्प कर लिया, किन्तु मुझे लिखना आता नहीं था तो कविता बनती कैसे? लिखने बैठी तो एक भी अक्षर नहीं लिखा गया। फिर मैंने किसी कवि की पुस्तक ली। वह पुस्तक पढ़ती, एक-एक कविता पर मनन करती और उन्हीं भावों को अपने शब्दों में ढालने का प्रयास करती। इस प्रकार मैंने तीस दिन की छुट्टियों में तीस कविताएं लिखीं, लेकिन उन कविताओं में मेरा अपना कुछ नहीं था। उस कवि के भाव थे और संभवतः कुछ शब्द भी कवि के ले लिए होंगे, लेकिन इससे मेरा अभ्यास क्रम शुरू हो गया।

इस तरह मेरे पास नैसर्गिक कुछ नहीं था। एक-एक क्षेत्र में मैंने चलना सीखा है। सब गुरुओं की कृपा से मुझे प्राप्त हुआ है। आचार्य तुलसी की मुझ पर कृपा रही। आचार्य महाप्रज्ञजी मेरे संसारपक्षीय मामाजी थे। उनकी अन्य संसारपक्षीय ज्ञाति साध्वियां उनके पास अध्ययन के लिए जाया करती थीं, किन्तु मुझे याद नहीं कि मैं कभी उनके पास अध्ययन के लिए गई, क्योंकि मैं शुरू से ही इतनी संकोचशील थी कि संतों के पास जाने में ही डर लगता था। मैंने ननिहाल भी पारमार्थिक शिक्षण संस्था में जाने के बाद ही देखा था। इसलिए मेरा ननिहाल से विशेष लगाव भी नहीं था। आचार्य महाप्रज्ञजी मेरी संसारपक्षीय मां के सगे चाचा के लड़के थे, किन्तु मैंने संकोचशील स्वभाव के कारण कभी उनकी उस दृष्टि से सेवा नहीं की।

मैंने गुरुदेव के निर्देश पर अणुव्रत के संदर्भ में लिखना शुरू किया। गुरुदेव मुझे फरमाते कि तुम लिखकर

महाप्रज्ञजी को दिखा दो। मैंने गुरुदेव से निवेदन किया कि आप ही उन्हें दिखा दीजिएगा, उसमें जो संशोधन के संकेत होंगे, उसके अनुसार मैं संशोधन कर दूंगी। कभी-कभी गुरुदेव को समय नहीं होता तो मुझे स्वयं जाना पड़ता तो गुरुदेव मेरे साथ संतों को भेजते कि इन्हें महाप्रज्ञजी के पास ले जाओ। इस प्रकार आचार्य महाप्रज्ञजी से मुझे जितना लाभ उठाना चाहिए था, मैं अपनी संकोचशीलता के कारण वह लाभ नहीं उठा पाई। यही बात आचार्य महाश्रमणजी के संदर्भ में है। जब आचार्यश्री को महाश्रमण पद पर नियुक्त किया गया, तब गुरुदेव ने कई बार फरमाया कि अब तुम दोनों साथ में बैठकर विचार करो, लेकिन हम बहुत ही कम बार बैठे। कभी बैठे तो आचार्यश्री (महाश्रमणजी) ने स्वामीजी के सिद्धांतों आदि के बारे में थोड़ी-सी चर्चा की। इस प्रकार आपकी भी संकोचशीलता थी और मेरी भी संकोचशीलता थी। इसलिए गुरुदेव का निर्देश होने पर भी ज्यादा साथ नहीं बैठ पाए। मैं यही मानती हूं कि आचार्यत्रयी की कृपा ने ही मुझे आज तक जीवित रखा है, मुझे कुछ बनाया है, कुछ सिखाया है।

परम पूज्य गुरुदेव! मैं बहुत सौभाग्यशाली हूं कि मैंने किसी जन्म में ऐसी करणी की थी कि मुझे ऐसा धर्मसंघ मिला, ऐसे आचार्य मिले, आचार्यों की कृपा, वत्सलता, आशीर्वाद के साथ रत्नाधिक साधु-साध्वियों की ओर से मुझे पूरा सम्मान मिला। उनके मन में भी मेरे प्रति जो आदर के भाव हैं, वे आचार्यों की कृपा के कारण ही है। मैं जो कुछ कहती हूं, गुरुदेव की कृपा से साध्वियां उसे करने के लिए तैयार रहती हैं। आचार्यप्रवर ने मुख्यनियोजिकाजी और साध्वीवर्याजी को भी इस रूप में तैयार किया है। मैं चाहती हूं कि गुरुदेव के शासनकाल में, गुरुदेव के मार्गदर्शन में साधु-साध्वियां और भी प्रगति करते रहें और हमारा श्रावक समाज भी प्रगति के शिखरों पर आरूढ़ हो। गुरुदेव मुझे ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें कि मैं जब तक जीऊं, स्वस्थ रहकर संघ की सेवा करती रहूं और आपकी दृष्टि की आराधना करती हुई आपकी सेवा करती रहूं।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'हमारे जीवन में पूर्वकृत भाग्य का योगदान रहता है। छोटी उम्र का व्यक्ति भी कितना ऊपर तक पहुंच जाता है। इसमें वर्तमान जीवन का पुरुषार्थ भी सहायक बन सकता है, परन्तु ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वह वर्तमान का पुरुषार्थ भी अतीत के कंधे पर खड़ा होता है। जैसे कोई छोटा बच्चा नीचे खड़ा रहे तो सबको दिखाई दे अथवा नहीं, किन्तु वह अपने पिता के कंधे पर बैठ जाए तो आसानी से दिखाई देने लग सकता है। इसी प्रकार वर्तमान का पुरुषार्थ रूपी बच्चा, अतीत के भाग्य रूपी पिता के कंधे पर बैठकर दृश्यमान बन सकता है। उससे व्यक्ति एक बहुत ऊंची भूमिका पर आरूढ़ हो सकता है।

भाग्य ज्ञातव्य और पुरुषार्थ कर्त्तव्य होता है। भाग्य को जानना तो ठीक है, किन्तु उसके भरोसे नहीं बैठना चाहिए। आदमी को अपने जीवन में विवेकपूर्ण सत्पुरुषार्थ करना चाहिए। पुरुषार्थ की अनेक बातों में एक है--दूसरों की सेवा करना। जीवन में किसी को आदर्श बनाना चाहिए और जिसे आदर्श बना लिया, फिर उसके प्रति समर्पित रहना चाहिए। समर्पण इतना हो कि फिर उसके लिए कुछ त्याग भी करना हो तो व्यक्ति कर ले।

हमारे धर्मसंघ की व्यवस्था में आचार्य का सर्वोपरि स्थान होता है। वे संघाधिपति होते हैं। धर्मसंघ में उनसे बड़ा कोई नहीं होता। यह हमारे धर्मसंघ की संवैधानिक और पारंपरिक व्यवस्था है। आचार्य पर धर्मसंघ के संचालन का बड़ा दायित्व होता है। धर्मसंघ में एक ओर साधु, समण और श्रावक समुदाय है तो दूसरी ओर साध्वी, समणी और श्राविका समुदाय है। तेरापंथ काफी व्यापक है। इतने व्यापक संघ का नेतृत्व एक बहुत बड़ा दायित्व होता है। साधना संबंधित भी कुछ सीमाएं हो जाती हैं।

साध्वियों आदि की सार-संभाल का भी सर्वोच्च दायित्व आचार्य का होता है। एक श्लोक में कहा गया है कि 'राजानश्चार चक्षुषः'--राजा अपने गुप्तचरों के माध्यम से सूचनाएं प्राप्त करते हैं और फिर उनके अनुसार अपने राज्य का संचालन कर सकते हैं। एक अन्य सूक्त है--'नेगेण चक्केण रहो पयाई'--एक पहिए से रथ

नहीं चलता। इसलिए राजा को सचिवों की नियुक्ति करनी चाहिए, ताकि कार्य में सुगमता हो जाए। आचार्य भिक्षु के समय तो साध्वियों के संदर्भ में कुछ छोटे रूप में कुछ व्यवस्थाएं रही होंगी। श्रीमज्जयाचार्य ने हमारे धर्मसंघ में नए आयाम स्थापित किए। उन्होंने साध्वी समुदाय में एक मुखिया साध्वी की व्यवस्था का बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य किया। मानों उत्तरवर्ती पीढ़ियों के लिए भी उन्होंने कुछ सुगमता बना दी। महासती सरदारांजी प्रथम मुखिया साध्वी बनीं। बाद में वह परंपरा आगे बढ़ती गई। कहीं-कहीं एक आचार्य के आचार्यकाल में अनेक साध्वीप्रमुखाएं आ जाती हैं तो कभी-कभी एक साध्वीप्रमुखा के साध्वीप्रमुखाकाल में अनेक आचार्य हो जाते हैं।

साध्वीप्रमुखा लाडांजी के प्रयाण के बाद कुछ समय तो यह स्थान रिक्त रहा, फिर परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने विक्रम संवत् २०२८ की माघ कृष्णा त्रयोदशी के दिन साध्वी कनकप्रभाजी को साध्वीप्रमुखा मनोनीत किया। आज उस प्रसंग को ४७ वर्ष सम्पन्न हो रहे हैं। आचार्यों की अपनी दृष्टि, अपना चिंतन होता है। कभी-कभी वे जितना दूर का देख लेते हैं, उतना सामान्य व्यक्ति न भी देख सके। गुरुदेव तुलसी ने आज के दिन एक छोटी उम्र की साध्वी को साध्वीप्रमुखा के स्थान पर नियुक्त कर दिया। आदमी थोड़ी देर में कहां से कहां पहुंच जाता है।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी को जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ में साध्वी समुदाय की सेवा का महनीय और रमणीय अवसर प्राप्त हुआ और हो रहा है। आपने गुरुदेव तुलसी के शासनकाल में सेवा की, आचार्य महाप्रज्ञजी की सन्निधि में सेवा की। अब तीसरी पीढ़ी के कार्यकाल में अपनी सेवाएं दे रही हैं। साध्वीप्रमुखाजी को कार्य करते-करते कार्य कौशल प्राप्त हो गया है, ऐसा लगता है। आप में बौद्धिकता भी है और आपकी रचनाधर्मिता भी सौष्ठव को प्राप्त है। केवल साध्वियों की सार-संभाल का ही नहीं, बाद में समणियों के भी पथदर्शन, प्रेरण का कार्य आपके सामने आ गया।

संघ का सौभाग्य है कि ऐसी साध्वीप्रमुखाजी हमें प्राप्त हैं। आप आज भी अपना दायित्व बखूबी निभा रही हैं, कार्य कर रही हैं। आपका ज्ञानाराधना और साधना का क्रम भी चलता है। ७५ वर्षों की सम्पन्नता के अवसर पर मैंने भी आपको विशेष साधना का कुछ क्रम बताया था। उसे भी आपने संभवतः ग्रहण किया और उस अनुरूप जीवन को मोड़ देने का प्रयास किया है। आप इस यात्रा में भी हमारे साथ हैं, यह भी एक विशेष बात है। संघ में आपका वर्चस्व भी अच्छे रूप में दिखाई दे रहा है। साधना खूब बढ़ती रहे। साध्वियों को विशेषतया और समणियों को भी आपसे पोषण मिलता रहे।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर वर्धापना कार्यक्रम के कुछ समय पश्चात् प्रवास स्थल से प्रस्थान कर तिरुपुर के तेरापंथ भवन में पधारे और कुछ क्षण विराजमान हुए। श्रद्धालुओं ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति देते हुए भवन के विषय में अवगति प्रस्तुत की। आचार्यप्रवर ने समुपस्थित जनता को पावन संबोध प्रदान किया तथा 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का आंशिक संगान किया। पूज्यप्रवर तेरापंथ भवन से प्रस्थान कर समणी संघप्रज्ञाजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों के निवास स्थान पर पधारे। आचार्यप्रवर के पदार्पण से सुराणा परिवार अहोभाव का अनुभव कर रहा था। करीब एक कि.मी. की यात्रा सम्पन्न कर आचार्यप्रवर पुनः प्रवास स्थल में पधारे। मार्ग में अनेक श्रद्धालुओं को अपने-अपने घरों के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन करने और मंगलपाठ सुनने का सुअवसर मिल गया।

ज्ञान, दर्शन के साथ चारित्र में भी बनें प्रवर्धमान

आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम वर्धमान महोत्सव के त्रिदिवसीय समारोह के मध्य दिन के संदर्भ में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के प्रारम्भ में साध्वीवृंद ने समूह स्वर में 'जिन शासन श्री वर्धमान भगवान का, इसकी महिमा अपरम्पार है' गीत को प्रस्तुति दी।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आज वर्धमान महोत्सव का द्वितीय और

मध्यवर्ती दिवस है। हमें चारित्र के क्षेत्र में भी वर्धमान रहने का प्रयास करना चाहिए। 'चारित्तं समभावो'--समभाव चारित्र है। साधुत्व स्वीकरण के समय तीन करण और तीन योग से सावद्य योगों का प्रत्याख्यान किया जाता है। न राग करना और न ही द्वेष करना। समभाव रहता है तो सावद्य योग हो ही नहीं सकता। साधु के कषाय का त्याग नहीं होता, उसके सावद्य योग (पापसहित प्रवृत्ति) का त्याग होता है। इसे स्पष्टता से इस प्रकार कहा जा सकता है कि साधु के कषाय आश्रव का त्याग नहीं होता, उसके अशुभ योग आश्रव का त्याग होता है। साधु के लिए यह ध्यातव्य होता है कि उसका योग सावद्य न बने। योग सावद्य तभी बनता है, जब कषाय योगों में आता है, अन्यथा योग सावद्य बन ही नहीं सकता। जब तक बारहवां गुणस्थान प्राप्त नहीं होता, तब तक कषायों से पूर्णतया मुक्ति नहीं होती। वर्तमान में साधु छठे गुणस्थान में स्थित होता है और कभी-कभी वह सप्तम गुणस्थान में भी जा सकता है। सप्तम गुणस्थान के ऊपर के गुणस्थान साधु के लिए वर्तमान में सुप्राप्य नहीं हैं।

चारित्र की वर्धमानता के लिए यह ध्यान रखना चाहिए कि कषाय योग में प्रविष्ट न हो। उदाहरणतया--एक साधु को गुस्सा आया, उसका चेहरा तमतमा गया, भृकुटि तन गई अथवा हाथ उठ गया तो इसका अर्थ है कि उसका काय योग अशुभ हो गया, सावद्य हो गया। यदि वह गुस्से में कटु बोलने लग जाता है तो इसका तात्पर्य है कि वचन योग में गुस्सा आ गया, वचन योग सावद्य हो गया। शरीर, वाणी में गुस्सा नहीं भी आया, किन्तु मन में गुस्सा आ गया तो इसका अर्थ है कि मनोयोग सावद्य हो गया। इस प्रकार जिस योग में गुस्सा आता है, वह सावद्य हो जाता है। चारित्र की वर्धमानता के लिए हम कषाय को योग के क्षेत्र में न आने दें।

कषाय का वियोग रहता है तो योग उज्ज्वल रहते हैं और कषाय का संयोग होने पर योग मलिन बन जाते हैं। साधु को छेदोपस्थानीय चारित्र ग्रहण करते समय पांच महाव्रतों का विस्तारपूर्वक प्रत्याख्यान करवाया जाता है। पहला महाव्रत है--'सर्वप्राणातिपात विरमण।' हम जीव हिंसा विरति के प्रति जागरूक रहें। एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के प्राणियों की हिंसा साधु से न हो, यह जागरूकता रहनी चाहिए। दरवाजा बंद करने आदि से पहले यह देखना चाहिए कि वहां कोई जीव-जंतु तो नहीं है ना। मार्ग में हरियाली आदि हों तो उसके स्पर्श से बचने का प्रयास करना चाहिए, ताकि हिंसा न हो।

दूसरा महाव्रत है--सर्व मृषावाद विरमण। संपूर्णतया मृषा से दूर रहना, किसी भी रूप में मृषा का प्रयोग न हो। क्रोध, लोभ, भय और हास्य के कारण गलत बात मुख से निकल सकती है। उससे बचने का प्रयत्न करना चाहिए। जानबूझ कर तो गलत बात मुंह से निकलनी ही नहीं चाहिए, अनजान में भी मृषा का प्रयोग न हो, इसके लिए जागरूक रहना चाहिए।

तीसरा महाव्रत है--सर्व अदत्तादान विरमण। दूसरे की वस्तु को उसकी अनुमति के बिना असमीचीन भावना से उठा लेना दोष का कार्य है। कोई बाहर गया हुआ है, पीछे से अवांछनीय भावना से उसका सामान देखना अथवा निकाल लेना दोष का कार्य है। साधु को अचौर्य महाव्रत के प्रति सजग रहना चाहिए।

चौथा महाव्रत है--सर्व मैथुन विरमण। इसमें भी कोई दोष न लगे, इसके लिए सजग रहना चाहिए।

पांचवां महाव्रत है--सर्व परिग्रह विरमण। साधु के पास सीमा से ज्यादा वस्त्र आदि पदार्थ नहीं रहने चाहिए। अग्राह्य पदार्थ तो कभी ग्रहण होने ही नहीं चाहिए। जो उपकरण आदि पास में हैं, उन पर मूर्च्छा से बचने का प्रयत्न करना चाहिए। मेरी पात्री, मेरा रजोहरण ऐसा नहीं बोलना चाहिए। बोलना हो तो ऐसे बोलना चाहिए--मेरे नेश्राय की पात्री, मेरे नेश्राय का रजोहरण आदि। और तो क्या स्वयं के शरीर पर मोह नहीं रहना चाहिए, हालांकि यह बहुत ऊंची बात है।

छठा व्रत है--रात्रि भोजन विरमण। रात में न खाना और न ही पानी पीना। सूर्यास्त से पहले-पहले पानी उठा देना अच्छी बात है। सिंघाड़े/साझ का मुखिया या कोई एक व्यक्ति सबको सजग करता रहे कि सूर्यास्त का समय निकट है, इसलिए पानी जल्दी उठाओ, कार्य जल्दी सम्पन्न करो। इस प्रकार उसे सूर्योदय आदि का

भी ध्यान रखना चाहिए।

ऋषिराय का घटना प्रसंग है। एक दिन सायंकाल वे आहार कर चुके थे। दूसरे संत आहार कर रहे थे। आकाश में बादल छा गए तो अंधेरा होने लगा। मकान में वृक्ष होने के कारण उस अंधेरे में कुछ वृद्धि और हो गई। संशय होने लगा कि कहीं सूर्यास्त तो नहीं हो गया है? ऋषिराय स्वयं मकान की छत पर गए। वृक्ष की ओट आ जाने से सूर्य दिखाई नहीं दिया, तब वे उसकी दीवार पर चढ़कर देखने लगे। पड़ोस के नवलमलजी बोहरा ने जब उन्हें दीवार पर चढ़े देखा तो संशय और आश्चर्य-मिश्रित भावों से पूछा--'महाराज! आप इस छोटी दीवार पर चढ़कर क्या देख रहे हैं?' ऋषिराय ने कहा--'संत आहार कर रहे थे और अंधेरा घिरने लगा, तब मुझे संदेह हुआ कि कहीं सूर्यास्त होने वाला तो नहीं है? यही देखने के लिए मैं दीवार पर चढ़ा था।' बोहराजी--'यदि सूर्यास्त हो गया होता तो?' ऋषिराय--'तो आहार-पानी का परित्याग कर परिष्ठापन कर दिया जाता।' इसी प्रकार सिंघाड़े/साझ में एक आदमी यह ध्यान रखे कि सूर्यास्त से पहले-पहले सारा कार्य यथाविधि सम्पन्न हो जाए।

पांच महाव्रत हमारा मूल चारित्र है। यह संवर धर्म है। चारित्र के साथ तप भी होता है। पांच समितियां तप हैं। चारित्रात्माओं को ईर्या समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदन निक्षेप समिति और उत्सर्ग समिति के प्रति भी जागरूकता रखनी चाहिए। मनो गुप्ति, वाक् गुप्ति और काय गुप्ति--ये तीन गुप्तियां भी संवर धर्म रूप होती हैं। अशुभ से निवृत्ति रखना गुप्ति की साधना होती है। मन, वचन और काय की अशुभ प्रवृत्ति से संयमन रखना चाहिए। पांच महाव्रतों, पांच समितियों और तीन गुप्तियों के प्रति जागरूकता बढ़ती है तो चारित्र की वर्धमानता का क्रम हो जाता है।

चारित्र की वर्धमानता का एक अच्छा उपाय है--भाव प्रतिक्रमण। भाव प्रतिक्रमण चारित्र पर्यवों की निर्मलता को बढ़ाने वाला होता है। प्रतिक्रमण को महत्त्व देना चाहिए। उसे सामान्य नहीं मानना चाहिए। प्रतिक्रमण के समय सामान्यतया अनपेक्षित बातें नहीं करनी चाहिए। बातों से प्रतिक्रमण कुछ क्षतिग्रस्त हो सकता है। प्रतिक्रमण का पाठ उच्चरित करना अच्छी बात होती है। उसे बीच-बीच में छोड़ना नहीं चाहिए।

चारित्रात्माएं और समणश्रेणी के सदस्य ही नहीं, श्रावक-श्राविकाएं भी अपने त्याग-नियम के प्रति जागरूक रहें, यह काम्य है। स्वीकृत नियमों में कोई दोष लग जाए तो उसका शुद्धीकरण होना चाहिए। आलोयणा के बिना गलती भीतर ही भीतर दबती गई और जीवनकाल में उसकी आलोयणा नहीं हुई तो विराधकता आ सकती है। उससे आत्मा का भी नुक्सान हो सकता है और आगे की गति में भी कुछ कठिनाई हो सकती है। इसलिए दोष लग जाए तो मन में प्रायश्चित्त की कामना रखनी चाहिए और यथासंभव उसका प्रायश्चित्त कर भी लेना चाहिए।'

तेरापंथ युवक परिषद-तिरुपुर के सदस्यों ने गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मण्डल कुन्नुर की सदस्याओं ने गीत के द्वारा पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

तेरापंथ महिला मण्डल-तिरुपुर की रजत जयंती के संदर्भ में कार्यक्रम समायोजित

कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मण्डल-तिरुपुर की रजत जयंती के संदर्भ में भी उपक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर तेरापंथ महिला मण्डल-तिरुपुर की अध्यक्ष श्रीमती अनिता बरड़िया और मंत्री श्रीमती अलका बैद ने अपने श्रद्धासिक्त हृदयोद्गार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मण्डल-तिरुपुर द्वारा गीत का संगान किया गया। महिला मण्डल-तिरुपुर रजत जयंती के संदर्भ में प्रकाशित स्मारिका पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की गई।

पूज्यप्रवर ने इस अवसर पर कहा--'तेरापंथ महिला मंडल-तिरुपुर की रजत जयंती का प्रसंग है। इस महिला मण्डल की सदस्याएं यथासंभव तत्त्वज्ञान में आगे बढ़ने का प्रयास करें। शनिवार को सायं सात बजे से आठ बजे के बीच सामायिक का क्रम बाइयों में, परिवारों में अच्छे रूप में चलता रहे। जीवन में जितना

त्याग-संयम का विकास हो सके, करने का प्रयास करना चाहिए। तिरुपुर क्षेत्र में ज्ञानशाला आदि धार्मिक गतिविधियां अच्छे रूप में चलती रहें। खूब अच्छा आध्यात्मिक कार्य होता रहे। मंगलकामना।'

आज का रात्रिकालीन कार्यक्रम साध्वीवृंद के प्रवास स्थल के आसपास समायोजित हुआ, जिसमें साध्वीप्रमुखाजी की वर्धापना में विविध प्रस्तुतियां हुईं।

आज पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री सी.पी. राधाकृष्णन और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक श्री सेन्दिलजी ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। अपराह्न में 'लक्स कॉजी' कम्पनी की तिरुपुर शाखा के प्रमुख श्री राहुल तोदी, 'डॉलर' कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री विनय गुप्ता, तिरुपुर सेवा समिति के अध्यक्ष श्री सम्पत्त पित्ति आदि कई व्यक्ति पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन पथदर्शन से लाभान्वित हुए। भारत सरकार के 'एनिमल वेलफेयर बोर्ड ऑफ इंडिया' के 'जल्लीकट्टू' इंस्पेक्सन कमेटी के चेयरमेन तथा दक्षिण भारत अग्रवाल समाज के अध्यक्ष श्री एस.के. मित्तल ने भी आज पूज्यप्रवर के दर्शन किए। उन्होंने पूज्यप्रवर से निवेदन किया कि आप मुझे ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें कि मैं 'जल्लीकट्टू' के लिए पशुओं पर होने वाली क्रूरता को नियंत्रित करवा सकूं। दिगम्बर जैन समाज के लोगों को भी आज पूज्यप्रवर के निकटतया दर्शन और मंगल आशीष प्राप्त करने अवसर मिला। स्थानीय मूर्तिपूजक समाज के लोग भी आज पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में बड़ी संख्या में पहुंचे। उन्होंने पूज्यप्रवर से उपाश्रय में पधारने की प्रार्थना की।

वर्धमान रहे क्षांति, मुक्ति और हितत्रयी

३ फरवरी। तिरुपुर के चार दिवसीय प्रवास का अंतिम दिन। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः तिरुपुर के स्थानकवासी और मूर्तिपूजक समाज के अनुरोध पर प्रवास स्थल से दो से अधिक कि.मी. दूरी पर स्थित उनके आराधना स्थलों में पधारे। इस क्रम में पूज्यप्रवर का पहले उपाश्रय में पदार्पण हुआ। पूज्यप्रवर के स्वागत में मूर्तिपूजक समाज के कई ट्रस्टियों सहित अन्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे। आचार्यप्रवर उपाश्रय में कुछ समय विराजमान हुए तो ट्रस्टी श्री दीपकभाई छेड़ा ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्यप्रवर ने उपस्थित जन समुदाय को पावन संबोध प्रदान किया। तदुपरान्त आचार्यप्रवर स्थानक में पधारे। स्थानकवासी समाज के पदाधिकारियों सहित बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों ने पूज्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया। आचार्यप्रवर स्थानक में कुछ पलों के लिए आसीन हुए। स्थानकवासी समाज के मंत्री श्री नरेश सांखला ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। आचार्यप्रवर ने समुपस्थित लोगों को उत्प्रेरित किया। आचार्यप्रवर प्रवास स्थल की ओर लौटते हुए अनेक श्रद्धालुओं के निवास स्थान में भी पधारे। इस प्रकार करीब छह कि.मी. की यात्रा कर पूज्यप्रवर पुनः प्रवास स्थल में पधारे।

आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम वर्धमान महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अंतिम दिन के रूप में आयोजित हुआ। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने इस अवसर पर कहा--'तेरापंथ धर्मसंघ जैसा मुझे कोई दूसरा धर्मसंघ नहीं मिला। इस धर्मसंघ का अपना वैशिष्ट्य है, अपना प्रभाव है। मेरे मन में विचार आता है कि मुझे यदि पुनः इस जम्बूद्वीप में जन्म लेना पड़े तो इसी संघ में मेरा जन्म होना चाहिए, क्योंकि यहां जैसी साधना हो रही है, उससे मुझे संतोष है, आत्मतोष है। महामना आचार्य भिक्षु का यह पुण्य-प्रताप है कि यह धर्मसंघ अपने प्रारम्भ से लेकर निरंतर प्रवर्धमान है। तेरापंथ ऐसा धर्मसंघ है, जहां एक से बढ़कर एक साधु-साध्वियां हुए हैं। जिनकी विनम्रता, संघनिष्ठा, श्रमनिष्ठा, समर्पण, सेवा भावना आदि वर्तमान पीढ़ी के लिए भी अनुकरणीय हैं। उनके द्वारा ही हमारा संघ तेजस्वी बना है। अनेक साधु-साध्वियों के जीवन से नम्रता की प्रेरणा ली जा सकती है।

परम पूज्य आचार्यप्रवर का विनय भाव तो हम सभी के लिए आदर्श है। आचार्यप्रवर की विनम्रता

उत्तरोत्तर प्रवर्धमान है। संघनिष्ठा की दृष्टि से भी आचार्यप्रवर हमें प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं। आचार्यप्रवर के जीवन में श्रमनिष्ठा भी बोलती है। आचार्यश्री का समर्पण गुरु के प्रति है, संघ के प्रति है और सत्य के प्रति है। इसी समर्पण के कारण आचार्यप्रवर कितनी कष्टपूर्ण और परिश्रमपूर्ण यात्रा कर रहे हैं। इस प्रकार की गुणवत्ता जिनमें होती है, उनका इतिहास बनता है।

इस धर्मसंघ में अनेक साधु-साध्वियां ऐसे हुए हैं, जिनके जीवन से कई दृष्टियों से प्रेरणा ली जा सकती है। उनमें एक हैं--मुनि कालूजी स्वामी (रेलमगरा)। धर्मसंघ में जब कभी कठिन परिस्थिति आती, उसे सुलझाने के लिए आचार्य उनका उपयोग किया करते थे। (साध्वीप्रमुखाजी ने मुनिश्री कालूजी 'रेलमगरा' के जीवन से जुड़े हुए प्रसंग सुनाए।) हमारे धर्मसंघ के इतिहास के प्रसंगों से ज्ञात होता है कि साधु-साध्वियों ने धर्मसंघ को प्रवर्धमान बनाने के लिए और श्रावक समाज की श्रद्धा परिपुष्ट करने के लिए कितना-कितना पुरुषार्थ किया। आज हम वर्धमान महोत्सव मना रहे हैं। हमारा यह दायित्व है कि हम हमारे धर्मसंघ के अतीत के साधु-साध्वियों के जीवन से प्रेरणा लें। ज्ञान, दर्शन व चारित्र की वृद्धि के लिए हम परम पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त उद्‌बोधन को आत्मसात करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ को प्रवर्धमान बनाएं। साधु-साध्वियों की वृद्धि के लिए वैरागी-वैरागण बनाएं तथा श्रावक समाज की श्रद्धा की परिपुष्टि का प्रयास करें। जो लोग किन्हीं कारणों से भ्रांत हैं, उनकी भ्रांतियों को दूर करने का प्रयत्न करें। परम पूज्य आचार्यप्रवर के सक्षम नेतृत्व में धर्मसंघ उत्तरोत्तर प्रवर्धमान होता रहे। यही मंगलकामना करते हुए चार पंक्तियां प्रस्तुत करना चाहती हूं--

तिरुवल्लूवर की धरती पर, प्रमुदित श्रमण संघ है सारा।
महाश्रमण की मंगल सन्निधि, खिलता हर दिन नया नजारा।
पृष्ठभूमि मर्यादोत्सव की, वर्धमान उत्सव यह पावन।
वर्धमानता का प्रतीक शुभ, लगता है सबको मन भावन।।

मुख्यमुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'तेरापंथ धर्मसंघ एक विशिष्ट धर्मसंघ है, जहां वर्धमानता का भी महोत्सव मनाया जाता है। वर्धमान महोत्सव के अवसर पर हमें परम पूज्यों से वर्धमान होने की प्रेरणा मिलती है। चतुर्विध धर्मसंघ के सभी अंगों का समुचित विकास होना चाहिए, तभी परिपूर्ण विकास हो सकता है। वर्धमानता के लिए कौशल विकास अपेक्षित है। वह अनेक दिशाओं में हो सकता है। गृहस्थ भौतिक विकास की दिशा में कुशलता का विकास करना चाहता है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी कौशल विकास किया जा सकता है। वर्धमान बनने के लिए किसी को आदर्श बनाना चाहिए और अपने आदर्श को सम्मुख रखकर विकास करना चाहिए। साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए हमारे आदर्श परम पूज्य आचार्यप्रवर हैं। आचार्यप्रवर को देखकर, सुनकर और पढ़कर हम अपने कौशल का विकास कर सकते हैं।

कौशल विकास के लिए व्यवहार कुशलता का विकास आवश्यक होता है और उसके लिए अपेक्षित है--उपशम, सहिष्णुता और विनय का विकास। कौशल विकास के अंतर्गत वक्तृत्व कौशल का भी विकास करना चाहिए। हमारा वक्तव्य मित, सारपूर्ण और यथार्थयुक्त होना चाहिए। हम अपने वक्तव्यों में आगमवाणी को युगीन रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करें। हमें प्राचीन और युगीन--दोनों प्रकार की भाषाओं के ज्ञान का विकास करना चाहिए। कौशल विकास के अंतर्गत रचना कौशल का भी विकास किया जा सकता है। कल हमने महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी से सुना कि उन्होंने किस तरह काव्य रचना का अभ्यास किया। आज साध्वीप्रमुखाजी की कविताओं की तुलना महादेवी वर्मा की रचनाओं से भी की जा सकती है, क्योंकि आपने इसका दीर्घकाल तक अभ्यास किया है। इस प्रकार अभ्यास के द्वारा रचना कौशल में भी निखार लाया जा सकता है।'

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'जीवन में क्षांति और मुक्ति में वर्धमान बनना चाहिए। क्षांति अर्थात् सहिष्णुता। आदमी के जीवन में आरोह-अवरोह की स्थितियां आ सकती हैं। वह कभी

आरोह कर सकता है तो किसी स्थिति में उसका अवरोहण भी हो सकता है। आरोहण करते-करते कभी अवरोहण हो जाता है तो आदमी को कितना अप्रिय लग सकता है। जब मन पर चोट लगती है, अपमान झेलना पड़ता है, उस समय शांत रहना, सहन करना महत्त्वपूर्ण बात होती है। जिन्दगी में प्रतिकूल परिस्थितियां आ सकती हैं, उन्हें सहन करने का अभ्यास रहना चाहिए। हमारे धर्मसंघ में विनय और अनुशासन के संस्कार दिए गए हैं। अनुशासन में रहने वाले व्यक्ति को कठोरता, उपालंभ आदि को सहन करना पड़ सकता है। उन्हें शांत भाव से, विनय भाव से सह लेना वर्धमानता की एक स्थिति है।

मुक्ति अर्थात् निर्लोभता, अनासक्ति। अवांछनीय आसक्ति का भाव नहीं रहना चाहिए। आसक्ति अपने आपमें में एक बंधन है और अनासक्ति अपने आपमें मुक्ति होती है। आदमी को मंजिल प्राप्ति तक अनासक्ति की दिशा में भी वर्धमान रहना चाहिए।

हमारे धर्मसंघ में अहंकार और ममकार को मानों व्यवस्थागत रूप में दूर रखने का प्रयास किया गया है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ का साधु-साध्वी समाज और श्रावक समाज भी अहंकार से सहजतया दूर रह सके, ऐसी व्यवस्था दी गई। हमारे धर्मसंघ के प्राण तत्त्वों में मानों ऐसी घूंट पिलाई गई है कि अहंकार को कुछ क्षेत्रों में पनपने और ममकार को भी पुष्ट होने का मौका न मिले। हमारे धर्मसंघ के साधु समुदाय में व्यवस्था है कि पद का उम्मीदवार नहीं बनना। यह अपने आप में अहंकार दूर रखने का सूत्र हो गया। पद की आकांक्षा को साधु संघ में गर्हणीय माना गया है। इस प्रकार मानों हमारे पुरखों ने चाहे, अनचाहे अहं को दूर रखने का प्रयास कर लिया।

अपना-अपना शिष्य-शिष्याएं न बनाए, धर्मसंघ के विधान की यह व्यवस्था मानों ममकार से दूर रखने वाली है। हमारे धर्मसंघ में इतने साधु-साध्वियां हैं, यहां तक की साध्वीप्रमुखाजी भी हैं, किसी का कोई शिष्य-शिष्या नहीं है। सभी शिष्य-शिष्याएं एक आचार्य के होते हैं। सहवर्तियों पर भी अग्रणी का वैधानिक अधिकार नहीं होता। किसी अग्रणी के पास वर्षों से कोई सहवर्ती है, दस मिनिट बाद ही उसे हटाया जा सकता है। उसे हटाने के बाद अग्रणी का वैधानिक अधिकार नहीं होता कि वह यह बोल सके कि मेरे सहवर्ती को कैसे लिया जा रहा है। इस प्रकार की व्यवस्थाओं से साधु संस्था को अहंकार और ममकार से मानों बचाने का प्रयास किया गया है। कई व्यवस्थाओं के बाद भी किसी क्षेत्र में छद्मस्थता के कारण अहंकार और ममकार का भाव आ सकता है। साधु को उसे विगलित करने का प्रयास करना चाहिए।

चारित्रात्माओं का मूल लक्ष्य आत्मकल्याण है, इसलिए उनके केन्द्र में आत्महित रहना चाहिए। एक दृष्टि से देखें तो संघ भी बाद में है, आत्महित हमारा प्रथम लक्ष्य है। आत्महित केन्द्र में रहे तो उसके एक ओर संघहित और दूसरी ओर शरीर हित रहे। हम संघ में जी रहे हैं तो हमारे द्वारा संघहित भी कैसे होता रहे, यह भी ध्यातव्य है। मुनिश्री कालूजी स्वामी (रेलमगरा) के विषय में मैंने जितना जाना व समझा, उन्होंने डालगणी को आचार्य मनोनीत करके संघहित का बड़ा ध्यान दिया। हमें संघहित को महत्त्व देना चाहिए। व्यक्ति सदा नहीं रहता, संघ चिरस्थायी हो सकता है। व्यक्ति-व्यक्ति वर्धमान बनकर संघ को वर्धमान करें। हम व्यक्तिगत स्वार्थ को गौण कर संघहित पर ध्यान दें, यह काम्य है।

हमारा स्वास्थ्य भी अच्छे रूप में रहना चाहिए। बालमुनियों का तो स्वास्थ्य और शरीर वर्धमान भी हो। चारित्रात्माएं व समणश्रेणी के सदस्य जितना हो सके, दूसरों की सेवा कम से कम लेने का प्रयास करें। सेवाकेन्द्रों में स्थित सेवाग्राही साधु-साध्वियों का रुझान यह रहना चाहिए कि जितना कार्य वे स्वयं कर सकें, उन्हें करने का यथासंभव, यथौचित्य प्रयत्न करना चाहिए। कार्य करने से निर्जरा का अवसर मिल सकता है और कुछ श्रम करने से स्वास्थ्य भी कुछ अच्छा रह सकता है। इस प्रकार हम क्षांति और मुक्ति को तथा आत्महित, संघहित और शरीरहित--इस हितत्रयी को भी वर्धमान बनाते रहें।'

'हाजरी' के प्रसंग में साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े-खड़े लेखपत्र उच्चरित किया। बालमुनियों, किशोरमुनियों और नवदीक्षित मुनियों (सम्मुखीन वर्ग) ने वर्धमान महोत्सव के संदर्भ में 'जय भैक्षव शासन' गीत का संगान किया।

कार्यक्रम के दौरान साध्वी लब्धिश्रीजी आदि साध्वियों ने करीब पांच वर्षों बाद पूज्यप्रवर के दर्शन किए। साध्वियों ने गीत के द्वारा अपने उल्लसित भावों को अभिव्यक्त किया। साध्वी लब्धिश्रीजी ने अपने हृदयोद्‌गार भी व्यक्त किए।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'वर्धमान महोत्सव का त्रिदिवसीय कार्यक्रम तिरुपुर में आयोजित हुआ। आज साध्वी लब्धिश्रीजी का भी सिंघाड़ा पहुंच गया। ये साध्वियां मैसूर चतुर्मास करके आई हैं। खूब अच्छा कार्य करती रहें। वर्धमान महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के समापन की घोषणा की जा रही है।'

स्थानीय विधायक श्री गुणशेखर ने कहा--'अहिंसा यात्रा लेकर पधारे आचार्यश्री महाश्रमणजी का तिरुपुर की समस्त जनता की ओर से मैं हार्दिक स्वागत और अभिनन्दन करता हूं। अहिंसा यात्रा के तीन संदेशों--सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के साथ तीन देश और उन्नीस राज्यों की यात्रा करते हुए तिरुपुर में आपके पदार्पण से यहां का जन-जन हर्षित है। आपके संकल्प यहां के लोगों का भी कल्याण करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। मैंने भी इन संकल्पों को पढ़ा है और इन्हें मैं अपने जीवन में उतारने का प्रयास करूंगा।'

वर्धमान महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाश दूगड़, श्री शांतिलाल झाबक और बालिका साक्षी सेठिया ने पूज्यचरणों में अपने भाव सुमन अर्पित किए। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना की।

आज तिरुपुर की डिप्टी कमिश्नर ई.एस. उमा तथा डी.एस.पी. धनराजसू ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल मार्गदर्शन प्राप्त किया।

आज सायंकाल परमाराध्य आचार्यप्रवर तिरुपुर से कन्यामुण्डी की ओर प्रस्थित हुए। इस अवसर पर तिरुपुर के लोग मंगल भावों और कोयम्बत्तूर के लोग उल्लसित भावों के साथ उपस्थित थे। विशाल जनमेदिनी पर आशीष वृष्टि करते हुए आचार्यप्रवर ने प्रस्थान किया। मार्ग में अनेक घरों आदि के आसपास उनसे संबंधित परिवार पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। आचार्यप्रवर एक अक्षम महिला को दर्शन देने मार्ग से कुछ भीतर स्थित उसके घर में भी पधारे। लगभग ६.७ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर कन्यामुडी में स्थित 'तिरुपुर बिल्डर्स सेंटर' भवन में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

४ फरवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः कन्यामुडी से करुमथमपट्‌टी की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती ओथापालयम के ग्राम्यजनों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। आज का विहार मार्ग प्रारम्भ में संकरा और घुमावदार था। अहिंसा यात्रा के काफिले के कारण मार्ग और भी संकरा बन गया था। मार्ग के किनारे हरियाली भी थी। ऐसी स्थिति में पूज्यप्रवर द्वारा उच्चरित 'सावधान' आदि शब्द सबको वाहनों से तथा हरियाली की हिंसा से बचने के लिए सजग कर रहे थे। परिपार्श्व में स्थित नारियल, केलों आदि के बगीचों के कारण मार्ग हरितिमायुक्त बना हुआ था।

पूज्यप्रवर संकरे मार्ग से राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर ८१ पर पधारे। यह राजमार्ग '१० लेन' के रूप में बना हुआ है। संकरा पथ हो या विशाल राजमार्ग अहिंसा यात्रा निरंतर अपने गंतव्य की ओर गतिमान थी। लगभग २.६ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर करुमथमपट्‌टी में स्थित 'तेजा शक्ति इंस्टिट्‌यूट ऑफ टेक्नोलॉजी फॉर वुमेन' में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। संस्थान की ऑनर श्रीमती तारालक्ष्मी पूज्यप्रवर के स्वागत में कलश, नारियल आदि लिए मुख्य द्वार पर उपस्थित थीं। आचार्यप्रवर के पधारते ही उन्होंने पूज्यप्रवर को सविनय वंदन कर भावभीना स्वागत किया।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में समुपस्थित जनता को सक्षम अवस्था के रहते-रहते पुरुषार्थ साध्य धर्म करने की प्रेरणा प्रदान की।

संस्थान की ऑनर श्रीमती तारालक्ष्मी ने अपने संस्थान के कुछ समय से बंद होने की अवगति देते हुए कहा--आचार्यश्री! आज आपके चरण यहां पड़े हैं और आपश्री का आशीर्वाद हमें मिला है तो हम उम्मीद करते हैं कि फिर से इस इंस्टिट्यूट में हजारों-हजारों विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करेंगे। मैं आपके आगमन से कितनी हर्षित हूं, इसे मैं शब्दों में नहीं बता सकती। आपकी कृपा हम सभी पर सदैव बनी रहे।'

आज सायंकालीन आहार के उपरान्त आचार्यप्रवर तेजाशक्ति इंस्टिट्यूट से करीब २.६ कि.मी. का विहार कर करुमथमपट्टी में स्थित ए.आर.सी. मैट्रिकुलेशन हाइस्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

५ फरवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः करुमथमपट्टी से करीब १०.५ कि.मी. का विहार कर अरसूर में स्थित महाराजा इंस्ट्रिटयूट ऑफ टेक्नोलॉजी में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। संस्थान के प्रिंसिपल श्री डॉ. सी. लोंगनाथन ने पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में मृषावाद से बचने की प्रेरणा प्रदान की।

मध्याह्न में संस्थान के ऑनर श्री के. परमशिवम सपरिवार पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। उन्होंने पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

सायंकालीन आहार के उपरान्त आचार्यप्रवर अरसूर से करीब ३ कि.मी. का विहार कर नीलाम्बुर में स्थित जी.आरडी.सी.पी.एफ. मैट्रिकुलेशन हायर सेकेण्ड्री सकूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के मुख्य द्वार से भीतर जाने के मार्ग के दोनों ओर नारियल के वृक्षों की कतार लगी हुई थी, जिनके बीच से पूज्यप्रवर गतिमान हुए तो एक मनोहारी दृश्य उपस्थित हो गया।

केरल सरकार द्वारा पूज्यप्रवर को गेस्ट ऑफ गवर्नमेंट का सम्मान अर्पित

केरल राज्य सरकार ने अपने राज्य की यात्रा के संदर्भ में अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यप्रवर को 'गेस्ट ऑफ गवर्नमेंट का सम्मान अर्पित किया है। ६ फरवरी २०१९ को राज्य सरकार की ओर से जारी इस आशय के पत्र में अपने संबंधित विभागों को आवश्यक निर्देश जारी किए गए हैं। पूज्यप्रवर को इस प्रकार का राजकीय सम्मान अर्पित करने वाला केरल भारत का पन्द्रहवां राज्य है।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार के लिए पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, ३ पोर्चुगीज चर्च स्टीट, कोलकाता ७०० ००१
मो. नं. ७०४४७७८८८८ Email : vigyapti@terapanthinfo.com

आनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाइल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

●

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे- 9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला